—जन्मदिन पूजा विधि—

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धारण करें। थाल में सात गांठ वाले नारीवन को रख कर नमस्कार करते हुए पढ़ें –

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याय सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रीतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर-अपि सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढ़ें—

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति। मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षा णो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली में पवित्र धारण करके अपने आपको तिलक, अर्घ, पुष्प लगाते हुए पढ़ें—

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

रत्नदीप धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अर्पण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुए पढ़ें—

नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।

खोसू से थाली में नारीवन के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुए पढ़ें—

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्मद्वीपं शरणं प्रपद्ये आत्मने नारायणाय—आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्कल्पात्सिद्धिर-स्तु धूपो नमः

दीपो नमः ।

जल सहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुए पढ़ें—

सं वा सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः । संसृष्टः-तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः । सं यावः प्रियाः-तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः आत्मा वो अस्तु सं प्रियः सं प्रियः तन्वो मम ।

इसी जल की धारा को नारीवन पर डालते हुए पढ़ें—

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव । मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव । बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव ।

जन्मोत्सवदेवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः ।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॐ ३ ।

जन्मोत्सवदेवतानां अर्चां अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व ।

इस मन्त्र से हाथ में पकड़े हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डाल कर फिर से दर्भ के दो तिनके आसन के रूप में नारीवन के सामने डालते हुए पढ़ें—

सप्तजन्मोत्सवदेवतानां आसनं नमः ।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़ कर केवल चावल को कन्धों से फेंकते हुए पढ़ें—

सप्तजन्मोत्सवदेवताभ्यः युष्मान् पूजयामि । ॐ पूजय ।

दर्भ के दो तिनके इसी तरह पकड़ कर पढ़ें—

सहस्रशर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिं विश्वतो वृत्वा अत्यतिष्ठत्-दशाङ्गुलम् जन्मोत्सवदेवताः आवाहयिष्यामि । ॐ आवाहय ।

ऊपर पकडे हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डाल कर तीन बार फूल नारीवन पर डाल कर पढ़ें—

भगवन् ! पुण्डरीकाच ! भक्तानुग्रहकारक ! अस्मद्यानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ! ३ ।

दोनों कन्धों के ऊपर से अर्घ फेंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुए पढ़ें—

पाद्यार्थमुदकं नमः । शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं योरभिस्रवन्तु नः ।

लाय केसर सर्वौषधि दर्भ जल ये सब चीजें खोसू में डाल कर नारीवन पर यही जल छोड़ते हुए पढ़ें—

अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्त चिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः ।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल्य में डाल कर फिर से खोसू में जल डालते हुए पढ़ें—

शन्नों देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं योरभिस्रवन्तु नः ।

जल, दर्भ, घी, दही, चावल, जौ सर्वौषधि ये आठ चीजें खोसू में डाल कर नारीवन पर डालते हुए पढ़ें—

अश्वत्थमन् बल व्यास हनुमन् कृपाचार्य मार्कण्डेय परशुराम सप्तचिरजीवाः इदं वोऽर्घ्यं नमः ।

शुद्ध जल डालते हुए पढ़ें—

प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः ।

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुए पढ़ें—

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदल-पद्मासनाय नमः सहस्रदलपद्मासनाय नमः ।

किमासनं ते गरुडासनाये किं भूषणं कौस्तुभभूषणाय । लक्ष्मी-कलत्राय किमस्ति देयं वागीश किं ते वचनीयमस्ति ।

नारीवन को आसन पर बिठाते हुए पढ़ें—

उत्-तिष्ठ भगवन्-विष्णो ! उत्-तिष्ठ कमलापते ! उत्-तिष्ठ त्रिजगत्-नाथ ! त्रैलोकीमङ्गलं कुरु ।

नारीवन के सात गांठों को तिलक लगाते हुए पढ़ें—

अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्त चिर जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः ।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करके नारीवन पर अर्घ और पुष्प चढाते हुए पढ़ें—

अश्वात्थाम्ने० अर्घो नमः पुष्पं नमः ।

धूप और रत्नदीप कर्पूर चढाते हुए पढ़ें—

तेजोसि शुक्र-असि ज्योतिर्-असि धामासि प्रियं देवानां अनाधृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञियेभ्यो गृह्णामि जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः ।

चामर करते हुए पढ़े —

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे, उद्धर मां-असुरेशविनाशन पतितोहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम्-अनुकम्पय-दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम् ।

भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय सप्तजन्मोत्सवदेवताभ्यः चामरं परिकल्पयामि नमः ।

फूल चढाते हुए पढ़ें—

ॐ ध्येयं सदा परिभवघ्नम्-अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम् । भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।

नमस्कार करते हुए पढ़ें—

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा च अष्टांङ्ग नमस्कारं करोमि नमः ।

नारीवन पर आचमन के लिये जल डालते हुए पढ़ें—

प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः ।

दक्षिणा डालते हुए पढ़ें—

जन्मोत्सवदेवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि ।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुए पढ़ें—

एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ।

पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें—

ओं तत्-विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुर-आततं । तत्-विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर यत्परमं पदम् ।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में चुटो और पांच मिचियां रखें नैवेद्य के साथ दही और मिषरी भी रखें, नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़ कर सारा नैवेद्य (पृष्ठ नं० ११ से पढ़ें) फिर दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़ कर देवताओं को विसर्जन करते हुए गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ कर फिर से पढ़ें —

अश्वत्थाम्नः बले व्यासस्य हनुमतः कृपाचार्यस्य मार्कण्डेयस्य परशुरामस्य जन्मोत्सवदेवतानां रक्षाबन्धन पूजनम् अच्छिद्रं सम्पूर्णम्-अस्तु एवम्-अस्तु ।

ऊपर पकड़े हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डाल कर नैवेद्य खाने की आज्ञा मांगते हुए पढ़ें—

आज्ञा में दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे । शरीरयात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि ।

क्षमा पुष्प चढाते हुए पढ़ें—

आप्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।

पवित्र निकाल कर हाथ में नारीवन बान्ध कर चुट्ट कहीं बाहर रख कर निर्माल्य नदी में डाल कर नैवेद्य के साथ दही शकर दायें हथेली में रख कर मुंह में डालते हुए पढ़ें—

मार्काण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन आयुर आरोग्य सिद्धयर्थम् प्रसीद भगवन् मुने।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

———